11

# पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप न करें

## (मत्ती 12:30-37)

पवित्र आत्मा के इस अध्ययन में पूरी बाइबल के सबसे जटिल और कम समझ आने वाले पदों में से एक पर ध्यान दिया जाएगा। सुसमाचार के हर प्रचारक ने किसी से जो यह मानता था कि उसने ''क्षमा न किया जा सकने वाला पाप'' या ''पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप'' किया है, की बात की है। एक महिला जो समय-समय पर मुझसे बात करती रहती है, इस बात को कि उसने क्षमा न किया जा सकने वाला पाप किया है, इतना मानती है कि वह केवल इसी प्रतीक्षा में है कि कब मरे और उसे शैतान द्वारा अनन्त गड्ढे या नरक में ले जाया जाए। जितने भी लोगों से मैंने बात की है, उन सबसे पीड़ित मुझे वही लगी है!

यीशु की बातें, जिन्हें हम मत्ती 12 में पढ़ते हैं, फरीसियों द्वारा उस पर लगाए गए झूठे आरोप के उत्तर में कही गई थीं कि ''जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात करेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा ...'' (आयतें 30-37)।

यीशु ने अभी-अभी दुष्ट आत्मा से ग्रस्त एक आदमी को जो अन्धा और बहरा था, चंगा किया था। भीड़ के लोग चकित होकर पूछने लगे थे, ''क्या दाऊद की संतान है?'' (आयत 23) कृपया किताब से मिलाएं। लोगों को आश्वासन देते हुए फरीसियों ने बड़े द्वेषपूर्ण ढंग से प्रतिक्रिया जताई थी, ''यह तो दुष्टात्माओं के सरदार बालज़बूल की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता'' (आयत 24)। यीशु ने उनके उपहासपूर्ण आरोप का आत्मा की निंदा के पाप के सम्बन्ध में, जो ऐसा पाप है जिसे यीशु ने कहा कि ''न इस लोक में और न परलोक में'' (आयत 32) कभी क्षमा नहीं किया जाएगा, अपनी शिक्षाओं के साथ उत्तर दिया।

### क्षमा न किया जा सकने वाला पाप

**मन का पाप**

आत्मा की निन्दा करने के पाप को समझने के लिए मत्ती 12:25 में देखा जाता है,

जहां पता चलता है कि यीशु फरीसियों के मन की बातें जानता था। यीशु को उनके विचारों का पता था, इसलिए वह जानता था कि उनके मन इतने कठोर और इतने बेदर्द थे कि कभी उसके या सच्चाई के उसके संदेश के लिए खुल नहीं सकते भी। यीशु ने उन पर ''पवित्र आत्मा की निंदा'' का पाप अर्थात वह पाप करने का अरोप लगाया जिसकी ''क्षमा न की जाएगी'' (आयत 31)। यीशु आगे सिखाता रहा, हमारी बातों का पता चल जाता है कि हमारे मनों क्या चल रहा है, क्योंकि ''भला मनुष्य, मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य, बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है'' (आयत 35)।

**प्रगतिशील पाप**

क्षमा न हो सकने वाला पाप वह पाप नहीं है, जो लोग अचानक या संयोग से अनजाने में करते हैं कि क्षमा के अवसर को अपने लिए खो दें। नहीं! यीशु तो किसी ऐसे पाप की बात कर रहा था जो एक समय के अन्तराल में होता है। यह वह पाप है जो व्यक्ति परमेश्वर के वचन के प्रति अपने मन को कठोर करके प्रभु के साथ चलने से इनकार करते हुए करता है। यदि कोई परमेश्वर की इच्छा के प्रकाश में अपनी आंखें बन्द कर ले और उसके वचन की शिक्षाओं से अपने कानों को फेर ले तो उसके मन में कुछ होता है। उसका मन परमेश्वर के प्रति और आत्मा के प्रति ठण्डा और उदासीन होने लगता है। यदि वह परमेश्वर से ''नहीं'' और शैतान से ''हां'' कहना जारी रखता है तो वह यीशु से दूर होता जाएगा जिससे परमेश्वर के प्रति उसके मन में इतनी कड़वाहट भर जाएगी कि उसे कभी क्षमा नहीं किया जा सकेगा।

यही फरीसियों के साथ हुआ था! उन्होंने आश्चर्यकर्मों को और यीशु की शिक्षाओं को नकार दिया और उनके मन इतने कठोर हो गए कि उन्होंने सामर्थ के यीशु के आश्चर्यकर्मों को शैतान की शक्ति से किए गए काम बता दिया। उनके मनों को जानने के कारण, यीशु को मालूम था कि शैतान ने उन पर ऐसा कब्जा कर रखा है कि वे कभी मन फिराकर उसकी ओर नहीं आएंगे। उनके लिए कोई आशा नहीं थी। वे एक ऐसे पाप के दोषी थे, जिसके लिए उन्हें कभी क्षमा नहीं किया जा सकता था!

पवित्र आत्मा की निंदा के पाप के लिए क्षमा न मिलने का एक कारण यह नहीं है कि परमेश्वर पापी से प्रेम नहीं करता या उसे बचाना नहीं चाहता। इस पाप की क्षमा न मिलने का कारण पापी का दोष है, न कि परमेश्वर का! समस्या यह है कि पापी ने अपना मन इतना कठोर कर लिया है कि मन फिराकर उद्धार के लिए परमेश्वर के पास आने की उसकी कोई इच्छा ही नहीं है। जहां मनुष्य मन नहीं फिराता है, वहां परमेश्वर की ओर से क्षमा नहीं दी जा सकती।

**पसन्द का पाप**

पृथ्वी पर रहते हुए हम प्रतिदिन अनन्तकाल की ओर बढ़ रहे हैं। आज के दिन के अन्त में हम समय के टापू से कभी न खत्म होने वाले अनन्तकाल के सागर में चौबीस घण्टे आगे निकल जाएंगे। हर दिन चाहे हम अपने मनों को परमेश्वर के सामने दीन करना और अपने आपको प्रार्थना और उसके वचन के लिए देकर अपने जीवनों में उसकी इच्छा को पूरा करना चुनें या परमेश्वर के सामने अपने मनों को कठोर करके अपने मनों और देहों को

''शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका के घमण्ड'' (1 यूहन्ना 2:16) के लिए देकर अपने हृदयों को कठोर बनाना, इस जीवन में अपनी इच्छा से जो चाहे कर सकते हैं। हम अपने मनों को परमेश्वर के आगे दीन बनाएं या उसके सामने उन्हें कठोर करें। प्रभु के सामने हम अपने आप को जैसे भी पेश करेंगे, या उसके आगे से भागेंगे। या तो हम ''आत्मा के अनुसार'' चलेंगे या ''शरीर के अनुसार'' (रोमियों 8:4)।

हमें इस नियम की समझ आए या न, परन्तु यह परमेश्वर के वचन की सच्चाई है। प्रतिदिन के जीवन में हमारी पसंद को तय करने वाला मन है। अपने आप पर और अपनी इच्छाओं पर अपने मनों को लगाकर, या यीशु पर और उसकी इच्छाओं पर आप मन लगाएं? मूल समस्या मानवीय मन की ही है। इसी लिए इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने हमारे मनों के बारे में कई चेतावनियां दी हैं।

इब्रानियों 3:7-13 में हम पढ़ते हैं:

> ... यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो *अपने मन को कठोर न करो,* जैसा कि क्रोध दिखाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था, ... इस कारण मैं उस समय के लोगों से रूठा रहा, और कहा, कि *इनके मन सदा भटकते रहते हैं,* ... हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा *बुरा और अविश्वासी मन न हो,* जो जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए। वरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक-दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।

ये शब्द, जो भजन संहिता 95:8-11 से लिए गए हैं, हमें याद दिलाते हैं कि परमेश्वर के लोगों की सबसे बड़ी समस्या (पुराने नियम के यहूदियों की तरह, नये नियम के मसीहियों की भी) परमेश्वर के साथ अपने मन ठीक न रख पाने की है। नीतिवचन 4:23 में दी गई परमेश्वर की सीख को मानकर हम अच्छा करेंगे कि ''सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।''

मत्ती 12 वाले फरीसियों की यही समस्या थी। उनके मन कठोर थे और शैतान ने उनके प्राणों पर ऐसा कब्ज़ा कर रखा था कि वे यीशु द्वारा किए आश्चर्यकर्मों को शैतान की शक्ति से किया कहने लगे थे! यदि उन्होंने यीशु को यहां तक ठुकरा दिया कि उन्होंने उसी पवित्र आत्मा को जिसने यीशु को उन्हें सिखाने और आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी थी, ठुकरा दिया तो उनके लिए कोई आशा नहीं बची थी। वे क्षमा न किया जा सकने वाला पाप करने के दोषी थे!

## क्षमा न किया जा सकने वाला पाप करने के पग

इन बातों को दिमाग में रखते हुए, आइए उन कुछ विशेष पापों का अध्ययन करते हैं जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध किए जा सकते हैं और जो हमारे मनों को कठोर करने का कारण बन सकते हैं। हम इस बात से चौकस हैं कि जो लोग इन पापों को करते रहते हैं, अपने और

अपने परमेश्वर के बीच में बड़ी से बड़ी आत्मिक बाधा खड़ी करेंगे, जिससे एक दिन उनके मन इतने कठोर हो जाएंगे कि वे अपने पापों से अपने मन कभी नहीं फिराएंगे कि जिससे उन्हें क्षमा मिल जाए।

**आत्मा का सामना करना**

हम उसका और उसके वचन का सामना करके आत्मा के विरुद्ध पाप कर सकते हैं। यही वह पाप था जिसका आरोप प्रेरितों 7 अध्याय में स्तिफनुस ने यहूदियों पर लगाया था। उसने वहां बहुत खूबसूरत प्रवचन सुनाया था, जिसमें उसने अब्राहम के समय से लेकर पुराने नियम तक परमेश्वर के सभी उद्देश्यों को बताया था। अपने प्रवचन में उसने स्पष्ट रूप से बताया था कि किस प्रकार परमेश्वर यहूदियों के हर पाप, अविश्वासी तथा मूर्तिपूजा के बावजूद पूरे इतिहास में अपने उद्देश्य के लिए कार्य करता रहा। दृढ़तापूर्वक अपना संदेश सुनाते हुए, स्तिफनुस ने घोषणा की कि ''हे हठीले और मन और कान के खतना रहित लोगों, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे बाप-दादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो'' (प्रेरितों 7:51)।

**परमेश्वर की आज्ञा मानने से इनकार करना**

कोई परमेश्वर के वचन की बात सुनने से इनकार करके ''पवित्र आत्मा का सामना'' करने के पाप का दोषी हो सकता है। आज परमेश्वर लोगों से बाइबल अर्थात सच्चाई के अपने पवित्र वचन के द्वारा बात करता है। जो भी कोई परमेश्वर की सच्चाई को ठुकराता है और यीशु मसीह के सुसमाचार को मानने से इनकार करता है, वह ''पवित्र आत्मा का सामना'' करने का दोषी है। यह तो ऐसा है जैसे कोई पापी स्वयं यीशु के साथ कुश्ती कर रहा हो। पवित्र आत्मा के संदेश के द्वारा यीशु उस पापी को बताता है कि उद्धार पाने के लिए क्या करना आवश्यक है। यदि वह यीशु की बात मानने से इनकार कर देता है, तो ऐसा करके पवित्र आत्मा का सामना करता है। जितनी बार कोई परमेश्वर के वचन को ''नहीं'' कहता है, उतनी ही बार वह केवल आत्मा का सामना ही नहीं करता, बल्कि ऐसा करते हुए अपने मन को भी कठोर करता है!

''पवित्र आत्मा का सामना करने'' का पाप उस व्यवहार के विपरीत है, जिसके बारे में याकूब ने कहा कि परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पित होना आवश्यक है। उसने लिखा, ''इसलिए सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है'' (याकूब 1:21)। यही वह व्यवहार है जो ''पवित्र आत्मा का सामना करने'' के पाप से बचने के लिए हम सबका होना चाहिए। यह मन फिराव तथा दीनता का व्यवहार है। यह ऐसा व्यवहार है जो हमारी अपनी स्वार्थी इच्छा को छोड़ देता है ताकि हम प्रभु और उसकी इच्छा की ओर मुड़ सकें। परमेश्वर का वचन निर्बलता और अज्ञानता से किए गए पाप में जान-बूझकर प्रभु के विरुद्ध किए गए पापों से अलग करता है! गिनती 15 में मूसा ने दो तरह के इस पाप की बात की है। आयत 26 में उसने अनजाने में किए गए पाप और आयत

30 में अवज्ञापूर्वक किए गए पाप की बात की है। अनजाने में पाप करने वाले के लिए याजक के द्वारा पाप की बलि भेंट की जानी थी ताकि उसके पाप क्षमा हो जाएं। 30 और 31 आयतों में मूसा ने आगे जोड़ा, ''परन्तु ... जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करने वाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाएगा। वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालने वाला है, इसलिए वह प्राणी निश्चय नाश किया जाए; उसका अधर्म उसी के सिर पड़ेगा।''

**जान-बूझकर किए गए पाप**

अनजाने में किए जाने वाले पाप और जान-बूझकर किए गए पाप में नया नियम अन्तर करता है। इब्रानियों 10:25 में लेखक ने 26 से 31 आयतों को जोड़ते हुए मसीही लोगों को मण्डली में आना छोड़ने के जान-बूझकर किए जाने वाले पाप के विरुद्ध चेतावनी दी:

> क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के लिए यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। जब कि मूसा की व्यवस्था को न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा कि पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा: और फिर यह, कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

मूसा की व्यवस्था के अधीन ढिठाई से पाप करने वाले को बिना तरस के मार डाला जाता था। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने पूछा कि ''मसीह से मुंह फेर लेने वाले मसीही लोगों के लिए कितना कठोर दण्ड होगा?'' परमेश्वर का कोई बालक जिसे यीशु के लहू के द्वारा धोया गया है और उसे पवित्र आत्मा का अद्‌भुत दान दिया गया है, जान-बूझकर पाप करता है तो वह यीशु को पांवों तले रौंदकर अनुग्रह के पवित्र आत्मा का अपमान करता है! परमेश्वर हमारी यह समझने में सहायता करे कि उससे यह कहना कितना गम्भीर है कि ''मुझे मालूम है कि तेरी इच्छा क्या है, पर मुझे कोई यह नहीं बता सकता कि मुझे क्या करना है!'' ढिठाई का ऐसा व्यवहार मन को कठोर कर देगा और पापी और स्वर्ग में उसके पिता के बीच पाप की एक मेख गाड़ देगा जिसे कभी निकाला नहीं जा सकता।

परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष, दाऊद ने भजन संहिता 19:13 में प्रार्थना की थी, ''तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख; वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएं! तब मैं सिद्ध हो जाऊंगा, और बड़े अपराधों से बचा रहूंगा।'' ढिठाई के पाप जान-बूझकर किए जाने वाले पाप हैं, जिन्हें हम अपने मन में जानते हैं कि हमें नहीं करने चाहिए। कुछ लोग, ऐसे पापों

पर विजय पाने की परमेश्वर की सामर्थ के लिए प्रार्थनापूर्वक उसकी ओर देखने के बजाय, ढीठ बनकर बिना पछतावे के उन पापों में लगे रहते हैं। यदि कोई ऐसे पाप में लगा रहता है और क्षमा पाने के लिए मन फिराकर प्रभु के पास लौटने से इनकार करता है, तो उसका मन कठोर हो जाएगा। अन्त में उसकी स्थिति फरीसियों वाली हो जाएगी यानी वह मन फिराकर प्रभु की पवित्र इच्छा को मानकर उसके साथ चलने की इच्छा नहीं करेगा!

## इसे दूसरी तरह से कहें

1 तीमुथियुस 4:2 में पौलुस ने उन झूठों के विषय में लिखा है, ''जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है'' (1 तीमुथियुस 4:2)। गाय पर मोहर लगाए जाने पर उसकी चमड़ी का वह भाग दाग दिया जाता है और उसमें किसी प्रकार का अहसास और संवेदना नहीं रहती। ऐसे ही, यदि कोई व्यक्ति अपने ही विवेक के विरुद्ध पाप करना जारी रखे तो अन्त में उसका मन इतना कठोर हो जाएगा कि वह अपने पाप से मन फिराने और क्षमा तथा उद्धार पाने के लिए यीशु के पास लौटने की कोई इच्छा नहीं करेगा। परमेश्वर हम सब की सहायता करे कि हम मन की ऐसी भयानक स्थिति से बचें!

भाई पैरी कॉथन ने ''द अनपार्डनेबल सिन'' नामक अपने ट्रैक्ट में कुछ उदाहरण दिए हैं कि अपने मन में पवित्र आत्मा का सामना करते रहने पर व्यक्ति को क्या मिल सकता है। एक पल के लिए मान लें कि कोई आदमी एक छोटी रस्सी के साथ कुर्सी से बांधा गया है, वह आसानी से उस रस्सी को तोड़कर बंधन से मुक्त हो सकता है। दूसरी ओर मान लीजिए कि वह रस्सी उस आदमी और उसकी कुर्सी के गिर्द बहुत, बहुत बार लपेट दी जाती है, अन्त में वह आदमी उसमें इतना जकड़ा जाता है कि वह उन रस्सियों को तोड़कर कुर्सी से छूट नहीं सकता। मनुष्य के मन में ऊपर पड़ने वाले पाप के प्रभाव ऐसे ही हैं। पाप एक ऐसी रस्सी के समान हैं जो पापी को पाप करने पर हर बार और लपेटती जाती है, जिससे अन्त में वह पूरी तरह से पाप का दास या गुलाम बन जाता है। नीतिवचन 5:22 में सुलैमान ने इस स्थिति के बारे में लिखा है: ''दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मों से फंसेगा और अपने ही पाप के बन्धनों में बन्धा रहेगा।'' ''परन्तु,'' कोई कह सकता है, ''क्या यीशु पाप का बन्धन तोड़ नहीं सकता?'' हां, तोड़ सकता है यदि वह व्यक्ति मन फिराने को तैयार हो। यदि पापी पाप करता रहे, तो उसका मन इतना दुष्ट बन जाता है कि वह मन फिराकर प्रभु के पास उससे क्षमा पाने के लिए आने की हर इच्छा छोड़ देता है।

फिर मान लें कि कोई काफी समय तक प्रतिदिन अपनी दोनों आंखों में तेज़ाब की एक छोटी सी बूंद डालता है। अन्त में, उसकी नज़र बिल्कुल खत्म हो जाएगी। कोई डॉक्टर उसे ऐसा करने से मना कर सकता है। परन्तु यदि वह सुनने से इनकार कर दे और अपनी आंखों में तेज़ाब डालता रहे तो अन्त में वह पूरी तरह अन्धा हो जाएगा और दोबारा कभी देख नहीं पाएगा। अपनी आंखों की अपूर्णीय हानि करना क्षमा न हो सकने वाले पाप और अपनी आत्मा को नष्ट करने की तरह ही है। हर बात में पाप जान-बूझकर किया गया है और हर बात में हानि अपूर्ण है।

आत्मा का सामना करते रहने वाले पवित्र आत्मा के विरुद्ध एक और पाप करने के दोषी होते हैं, जो उसे शोकित करता है। इफिसियों 4:30 में पौलुस ने आज्ञा दी, ''परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।''

हमारे लिए ''पवित्र आत्मा को शोकित'' करना सम्भव है, क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व का एक ईश्वरीय व्यक्ति है और उसकी भावनाएं हैं। परमेश्वर का पवित्र आत्मा हम से इतना प्रेम करता है कि हम उसकी कभी कल्पना भी नहीं कर सकते। हमारे लिए अपने प्रेम के कारण उसने हमें हमारे स्वर्गीय पिता की सम्पूर्ण इच्छा बता दी ताकि हम इस पृथ्वी पर एक सम्पूर्ण जीवन बिताकर एक दिन स्वर्ग में पिता के साथ उसके बच्चों के रूप में अनन्तकाल तक रहें। पवित्र आत्मा किसी को कुछ भी करने के लिए बाध्य नहीं करेगा। अपने वचन के द्वारा वह हमें निर्देशित करता और स्वर्ग में अपने पिता की इच्छा को पूरी करने का निमन्त्रण देता है, परन्तु यीशु की सेवा या अपनी सेवा में से एक को चुनना हमारी अपनी पसन्द है। क्या हम उसकी पुकार को सुनेंगे या इस जीवन में अपनी इच्छा को ही पूरा करेंगे?

उड़ाऊ पुत्र के पिता को मालूम था कि जब कोई पुत्र विद्रोह करके पाप के दूर देश में चला जाता है तो पिता को कितना दुख होता है। जब पुत्र पिता को और घर की सभी आशिषों को छोड़कर चला गया तो पिता को उतना ही दुख हुआ था जितना किसी आदमी को हो सकता है। जो बात पिता के मन में थी वही पवित्र आत्मा के मन में होती है जब परमेश्वर की इच्छा के आगे झुकने के बजाय उसके बच्चे अपनी इच्छा पूरी करने का निर्णय लेते हैं। जो लोग उसकी इच्छा का सामना करते रहते हैं और ढिठाई के अपने पाप से पवित्र आत्मा को शोकित करते हैं, अन्त में वे अपने जीवनों में से पवित्र आत्मा को बुझा देते हैं जो ऐसा पाप है कि 1 थिस्सलुनीकियों 5:19 में पौलुस ने इसके विरुद्ध चेतावनी दी है कि ''आत्मा को न बुझाओ।''

आपको मालूम है कि आग कैसे बुझाई जाती है। उस पर पानी या रेत डालकर उसे बुझाया जाता है। पौलुस ने कहा कि मसीही लोग पवित्र आत्मा के विरुद्ध ऐसा कर सकते हैं। मसीही लोग उसका सामना करके उसे यहां तक शोकित कर सकते हैं कि अन्त में वे उसे बुझा दें और अपने जीवनों में से उसके प्रभाव को निकाल दें!

लौदीकिया की कलीसिया अपने जीवनों में आत्मा को बुझाने लगी थी। उस कलीसिया के नाम यीशु का संदेश था, ''मैं तेरे कामों को जानता हूं कि तू न तो ठंडा है और न गर्म: भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। सो इसलिए कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं'' (प्रकाशितवाक्य 3:15, 16)। यह कलीसिया पवित्र आत्मा का सामना करने और उसे यहां तक शोकित करने की दोषी हो रही थी कि वह उस आग को बुझा रही थी। वह यीशु और उसकी इच्छा के प्रति न तो ठण्डे थे और न गर्म।

मसीहियत अपने आत्मनिर्भर होने का धर्म नहीं है बल्कि यह पूर्ण रूप से पवित्रता में जीवन बिताने में सहायता के लिए यीशु पर निर्भर होना सीखने की प्रक्रिया है। इस लक्ष्य को पाने के लिए हमारे लिए अपने स्वार्थी विचारों से प्रतिदिन अपने आप को खाली करने को तैयार होना आवश्यक है। जो लोग उसकी आवाज़ को सुनते हैं वे अपने आप का इनकार करते और विश्वास और प्रेम में उसके आगे झुकते हैं, वे उसके आने और उन में रहने और

उनके द्वारा रहने के लिए अपने मनों के द्वार खोलते हैं।

प्रभु से दूर जाने वाला कोई भी कदम खतरनाक है, क्योंकि यह प्राण की स्वर्ग में अपने प्रिय पिता से अनन्त और अपरिवर्तनीय जुदाई की ओर कदम है। यदि बाहरी पापी मन फिराने और उद्धार के लिए यीशु की ओर लौटने से इनकार करता रहे, तो उसका मन परमेश्वर से और उसके सिद्ध प्रेम से दूर से दूर निकलते हुए कठोर होता जाएगा।

यही खतरा परमेश्वर के उस बालक के लिए है जिसने मन फिराकर बपतिस्मे में अपने पाप धो डालने के लिए यीशु के बहुमूल्य लहू पर भरोसा किया था। यदि परमेश्वर का बालक अपने जीवन में पवित्र आत्मा का सामना करता है तो वह उसे शोकित करता रहता है और अन्त में उसे बुझा देता है। परमेश्वर के बालक द्वारा पवित्र आत्मा को बुझा देने से, उसका मन इतना कठोर हो जाता है कि वह कभी मन फिराकर पिता की ओर वापस नहीं आएगा। वह इतनी दूर निकल गया है कि वहां से वापस नहीं आ सकता जिस कारण एक दिन अनन्तकाल के लिए नष्ट हो जाएगा।

## सारांश

नियाग्रा फाल्स के थोड़ा ऊपर एक बोर्ड लगा होता था, जिस पर लिखा था, ''*Past-Redemption Point.*'' इस बोर्ड पर लिखी बात का अर्थ स्पष्ट था। यदि कोई नाव लेकर गलती से इस बोर्ड के आगे निकल जाता, तो उसका प्रवाह इतना तेज़ था कि उसके लिए मुड़कर फाल्स से बचना असम्भव हो सकता था। एक पापी जो परमेश्वर की आज्ञा मानने में देरी करता है, वह ''पास्ट रिडैंप्शन'' प्वाइंट तक पहुंच सकता है। वह पवित्र आत्मा का सामना इतनी देर तक कर सकता है कि उसका मन नम्र न हो सके। कुछ लोग पहले ही अपने मनों के उस चिह्न को पार कर चुके हैं। सही-सही तो केवल यीशु को ही मालूम है। इस बात से चौकस हो जाएं कि ऐसी अदृश्य रेखा है कि यदि हम परमेश्वर के अनुग्रह से खेलते हैं और मसीहियत को खिलौना बना लेते हैं, तो किसी दिन हम उस रेखा से आगे निकल जाएंगे और मन फिराने का समय नहीं मिलेगा।

मन फिराने के लिए बहुत देर लगाने का खतरा एक कहानी द्वारा स्पष्ट समझाया गया है। कोई बाज़ एक मेमने की लाश पर खड़ा था, जिसे नदी में बर्फ के एक टुकड़े से जमाया गया था। वह बाज़ उस लाश की दावत उड़ा ही रहा था कि यह लाश झरने की ओर बहने लगी। बीच-बीच में वह बाज़ अपने घमण्डी सिर को उठाकर झरने के नीचे देख लेता जैसे कह रहा हो कि ''मुझ मालूम है आगे खतरा है, पर मैं जानता हूं कि मुझे क्या करना है। सही समय आने पर मैं उड़ जाऊंगा।'' वह बाज़ बर्फ के उस टुकड़े पर जिस पर यह अद्‌भुत सामान लदा हुआ था, डटा रहा और तेज़ धारा में बह गया। अन्तिम पल में उस बाज ने उड़ने के लिए अपने शक्तिशाली पंख फैलाए। लाश की दावत उड़ाते हुए, उसके पंजे मेमने की ऊन के साथ जम चुके थे। वह बड़ा फड़फड़ाया और चिल्लाया परन्तु झरने में बहकर डूब गया और अन्त में मर गया।

आज कई युवक और युवतियां पाप की लाश पर दावत उड़ा रहे हैं। वे समय के झरने

के नीचे तैरते हुए, अनन्तकाल के झरनों की ओर बह रहे हैं। वे एक दिन पूरी तरह से मन फिराने और परमेश्वर के साथ अपने मनों को सही करने का इरादा रखते हैं, परन्तु अभी वे जी भरकर मौज करना चाहते हैं। दिन-ब-दिन उनके प्राण अनन्तकाल के निकट, और निकट होते जा रहे हैं। अन्त में यह फैसला लेने पर कि उन्हें परमेश्वर के साथ सही होना है, वे पाएंगे कि पाप की ऊन छुड़ाना उनके लिए असम्भव हो गया है! वे अपनी पापपूर्ण आदतों में इतना फंस जाएंगे और उनके प्राण अनन्त मृत्यु की चट्टानों से बहने वाले झरनों में डूब जाएंगे, जहां नीचे अंधकार होता है! आप अपने साथ ऐसा न होने दे!

यदि आप मसीही नहीं हैं, तो प्रतीक्षा न करते रहें कि समय आप के हाथ से निकल जाए। अपने मन को नरम बनाएं जबकि आपके पास समय हैं और अपने पापों से मन फिराएं। विश्वास के साथ मसीह के पास आएं और क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा लें। अपने मन में परमेश्वर के आत्मा को बसने दें।

एक मसीही के रूप में, अपने अन्दर बसे आत्मा के विरुद्ध पाप न करें। उसका सामना न करें, उसे शोकित न करें और उसे बुझाएं न। उसे अनुमति दें कि वह आपको एक ऐसे व्यक्ति में ढाल दे, जिसके जीवन से अनन्तकाल के लिए परमेश्वर के साथ रहने की उसकी इच्छा का पता चलता है।